शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी लघुकथाओं में स्त्री विमर्श एवं माँ का स्वरूप

विजया त्रिवेदी (शोधार्थी)
डॉ. पुरूषोत्तम दुबे (निर्देशक)
भाषा अध्ययन शाला
देव अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

लघुकथा हिन्दी साहित्य की उन विधाओं में से एक हैं जिसने आधुनिक काल में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। शायद ही कोई पत्र-पत्रिका हो जिसमें लघुकथा ने अपनी जगह न बनाई हो। लघुकथा आज की लोकप्रिय विधा है। लघुकथा गद्य साहित्य की वह लघु आकारीय विधा है जो अपने कथ्य एवं कथोपकथन द्वारा किसी क्षण, घटना परिस्थिति अथवा विचारों को प्रभावपूर्ण ढंग से पाठक के समक्ष प्रस्तुत करती है। लघुकथाओं में स्त्री के विभिन्न रूपों पर अनेक दृष्टियों से विचार किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्त्री विमर्श एवं माँ के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

लघुकथा का अतीत उतना पुराना है, जितना साहित्य का। लघुकथा का संवाद 'देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर' वाली कहावत चरितार्थ करता है। आज के व्यस्त जीवन में पाठक के पास समयाभाव रहता है इसलिए लघुकथा में घनीभूत संवेदनाओं को कम शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता होती है। लघुकथाओं में नारी को अलग-अलग कोणों से देखा, परखा और विश्लेषित किया गया है। नारी-विमर्श की लघुकथाओं पर विचार करने से पूर्व स्त्री मानसिकता तथा पुरूषवादी को समझना आवश्यक है। तभी हम स्त्री के विभिन्न पक्षों पर निष्पक्ष रूप से विचार कर पाऐंगे।

नारी सुलभ जिन विशेषताओं का यहाँ उल्लेख हुआ है। तुम्हीं के तहत स्त्री ममतामयी माँ है। माँ को लेकर अनेक मार्मिक लघुकथाऐं लिखी गई है। इनमें माँ के उदान्त और उदार रूपों को चित्रित किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में लघुकथा में स्त्री विमर्श व माँ के स्वरूप पर विचार प्रकट किया है। स्त्री विमर्श, समकालीन साहित्य और पत्रकारिता का आज केंद्रीय विषय है। स्त्री संदर्भों को लेकर जो प्रश्नाकुलता और रचनात्मक छटपटाहट देखने को मिल रही है, उससे यह आभास होता है मानो स्त्री विमर्श आधुनिक या उत्तर आधुनिक साहित्य की ही सामाजिक चिंता है। स्त्री प्रकृति की अनुपम कृति है। उसका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उपन्यासकार राजा राऊ ने अपने उपन्यास 'साँप और रस्सी' में लिखा है, "स्त्री भूमि है, वायु है, ध्वनि है, मन की सूक्ष्म परत है। अग्नि है, गीत है, संगीत है, भाव है।"

स्त्री जितनी सुंदर व कोमल है, उतनी ही जटिल भी, बुद्धि, प्रतिभा और समझ की दृष्टि से कमतर नहीं है, किंतु शरीर-रचना और मानसिक

बुनावट की दृष्टि से स्त्री-पुरूष में जो नैसर्गिक अंतर है, उससे इनकार कर पाना मुश्किल है। पुरूष की तुलना में औरत अधिक सहिष्णु नमनीय, निष्ठावान, त्यागमयी और समर्पित है। वह पुरूष की बजाय ज्यादा सहनशील है। स्त्री की निष्ठा व सहन-शक्ति के इसी गुण के कारण संस्कृति पर चैतरफा हमलों के बावजूद भी हमारे समाज में भारतीयता मौजूद है।

लघुकथाओं में स्त्री विमर्श

स्त्री का श्रम और शरीर दोनों से शोषण होता है। स्त्री को धारा के विरूद्ध संघर्ष करना होता है। दिन भर खटती औरत को शाम को भी चैन नहीं। सतीशराज पुष्करणा की कथा के साथ-साथ प्रेम और विश्वास की डोर भी अंडर करंट की तरह प्रवाहित होती है। प्रेम और स्मृति की ऐसी ही अंतर्धारा स्व. रमेश बत्तरा की लघुकथा 'लड़ाई' में देखी जा सकती है। सतीश वर्मा की लघुकथा 'कुण्डी' भी पुरूष की वासना-वृत्ति को उजागर करती लघुकथा है। श्यामसुंदर अग्रवाल की रचना 'अपने-अपने दर्द' भी पुरूष की भोगवादी वृत्ति पर प्रहार करती है। अग्रवाल जी की ही एक ओर अन्य कथा एक 'उज्जवल लड़की' बताती है कि प्यार में तन से अधिक महत्वपूर्ण है मन। मन स्वच्छ, पवित्र और निष्ठावान है तो स्त्री का अस्तित्व मजबूत है। देह शोषण के खिलाफ खड़ी होने वाली पिछड़े वर्ग की निर्धन लड़की के विद्रोह और साहस को स्वर देती सशक्त लघुकथा है चित्रा मुदगल की 'नाम'। पति को परमेश्वर मान अन्याय सहती रहती स्त्री के मानस पर व्यंग्य करती एक प्रभावी लघुकथा है 'परमेश्वर'।

स्त्री का उत्पीड़न कई स्तरों पर होता है। स्त्री को संदेह की दृष्टि से देखने वाला पुरूष उसे प्रायः चरित्रहीन मानता है। जबकि लघुकथा 'स्त्रीपुरूष की नायिका जिस रिक्शे वाले से बाते कर रही थी वह उसका बाप था। बेटे की चाह को व्यक्त करने वाली लघुकथाओं की तादाद भी कम नहीं है। लड़की के पैदा होने पर पति तो पत्नी को कोसता ही है, सास, जो स्वयं एक स्त्री है, वह भी औरत जात को पैदा करने के लिए बहू को ताने मारती है। पढ़े-लिखे लोग भी पुत्र की कामना करते पाए जाते हैं। 'सास' (धर्मपाल अकेला), ' ईश्वर का न्याय और चौखट' (ओम शर्मा) लघुकथाएँ पुत्री-जन्म को हेय दृष्टि से देखने वाले गुप्तजी की अंधविश्वास सोच पर करारा व्यंग्य है। 'खुशखबर' में पंडित जी की सलाह अनुसार सात गरीब कन्याओं को भोजन कराने के बाद भी परिणाम मनोनुकूल नहीं आता। यह कहानी भी पुरुषवादी संकीर्ण मानसिकता को इंगित करती है।

यदि कोई पक्षी बहुत काल तक पिंजरे में जीवन बिताये तो उसे पिंजरे में बंद रहने की ऐसी आदत पड़ जाती है कि वह उड़ने की और स्वतंत्रता से घूमने की शक्ति रखते हुए भी पिंजरे ही में बंद रहना पसंद करता है। उड़ा देने पर भी फिर से पिंजरे में बंद होकर ही अपने को सुखी मानता है। ठीक यही दशा भारतवर्ष की अज्ञानांधकार से ग्रस्त महिला समाज की है।

समाज की घृणित रूढ़ियों का पालन करते-करते स्त्रियों को ऐसी आदत पड़ गई है कि नाना प्रकार के कपट और अपने हकों पर घात होते हुए भी उन्हें अपनी रूढ़ि की श्रृंखला ही अच्छी मालूम पड़ती है। भारत के मध्यकाल में स्त्री जाति को अत्यंत हे दृष्टि से देखा गया। उसे सामाजिक क्षेत्र में तो प्रतिष्ठा प्राप्त थी ही नहीं, साधना के क्षेत्र में भी उसे स्थान नहीं दिया गया। पुनर्जागरण काल में समाज सुधारकों का ध्यान

इस ओर गया और उन्होंने नारी मुक्ति के आन्दोलन का प्रवर्तन किया।

लघुकथाओं में माँ का स्वरूप

'माँ' एकमात्र ऐसा शब्द है, जिसके उच्चारण पूर्व न तो कोई भूमिका होती है और न ही पर्याय रूप में किसी दूसरे शब्द के प्रयोग की आवश्यकता जान पड़ती है। वस्तुतः यह एक ऐसा सागर है, जिसकी गहराई में सारे मानवीय गुण या व्यवहार समाहित हैं। हमारी पौराणिक कथाओं में माँ की परिक्रमा तथा मौजूदगी सर्वव्यापक मानी जाकर उसे शक्तिरूपा देवी माना गया है। सुख-दुःख, त्याग, रूप-स्वरूप को अपने अनुभूत-यथार्थ, परिवेश और सोच से उकेरकर माँ की जो शब्द-तस्वीर प्रस्तुत की गई है, वह रोमांचित कर देने वाली है। माँ का रूप कहीं-कहीं हृदय को द्रवित कर देता है। यहाँ तक कि भूख से बिलखते अपने बच्चे की प्राण-रक्षा के लिए माँ अपना शरीर तक बेचने को तैयार हो जाती है। (सौदा-नियाज) हर माँ की संवेदना एक-सी होती है। यह स्पष्ट होता है रामनिवास मानव की लघुकथा 'माँ' से, अपने साथ कैसा भी दुर्व्यवहार हो, माँ कभी बेटे का अहित नहीं चाहती (ममता-कृष्णा-नंद कृष्ण) अलग कमरे में रहकर खाना पका रही 'माँ'-सूर्यकांत नागर)। एक स्त्री ही जान सकती है कि माँ के आँचल में जो सुरक्षा और शीतलता है, वह बड़े से बड़े कवच या कंडीशनर में नहीं है। माँ का आँचल कितना ही मैला हो, श्रम से सना हो, संतान को उसमें ममत्व की महक महसूस हो ही जाती है।

'मातृत्व कथा में माँ बेटे को डाँटती है कि वह स्कूल में अपने टिफिन का आधा खाना दोस्त को क्यों खिला देता है। बेटा बताता है कि दोस्त की माँ नहीं है और उसे नौकर के हाथ का भोजन तनिक भी अच्छा नहीं लगता। बस इसलिए...। सुनकर माँ को लगता है, वह माँ तो काफी पहले बन चुकी थी, पर मातृत्व का असली मतलब उसकी समझ में अब आया है। लेकिन अपवाद कहाँ नहीं होते। बोतल में 'बंद ममता' (कोमल) में आधुनिक माँ न केवल बच्चों को आया के भरोसे छोड़ देती है, बल्कि अपना दूध भी पिलाना पसंद नहीं करती, क्योंकि उसके शरीर की बनावट के बिगड़ने की आशंका रहती है।

माँ के ममत्व का जो सर्वग्राही स्वरूप है वह हमें लघुकथाओं में देखने को मिलता है। माँ व्यापक, स्नेह और संरक्षण का विराट रूप है, उससे इंकार नहीं किया जा सकता। माँ का रूप सरला जी के 'माँ शक्ति' में देखने को मिलता है। 'माँ ! किसी भारतीय घर में पैठकर देखो, वहां देखोगी एक अल्प वयस्का क्षीण पीतांगी वधू जिसके अभी खेलने-कूदने के दिन थे, मातृत्व की तैयारी कर रही है। कैसी भोली नादान बच्ची है, अभी दूध के दांत भी नहीं उखड़े परंतु माता बनने जा रही है।' "स्वार्थी मनुष्य समाज सुधार की बढ़-चढ़कर बातें कर रहा है। उन्नति, के लिए गला फाड़-कर चिल्ला रहा है, पर माँ ! घरों के अंदर रहने वाली इस संजीवनी शक्ति को निर्दयता के साथ कुचला जा रहा है।" कोई अपमान माँ की महिमा को परिभाषित नहीं कर सकता। माँ कैसी है, माँ जैसी है। तपती है झुलसती है, भीगती है, ठिठुरती है, अपना सारा जीवन त्याग, तपस्या, और ममता बिखरते हुए एक दिन सबको छोड़कर हमेश के लिए चली जाती है।

माँ के इन्हीं वैविध्य स्वरूप को केन्द्र में रखकर अनेक लघुकथाओं ने मानवीय और मानवेतर प्राणियों में माँ के महत्व को विश्लेषित किया है।

निष्कर्ष

'नारी विमर्श' से संबंधित लघुकथाएं आज चर्चा में हैं। नए विषयों की लघुकथाओं की आज मांग है।

आज की लघुकथा, परिवार की उलझनों के साथ-साथ विश्व की समस्याओं को लेकर भी लिखी जा रही हैं। इसका फलक अब सीमित दायरे में सिमटा दिखाई नहीं देता। 'भविष्य से साक्षात्कार' में इंदु गुप्ता ने नारी से सम्बंधित समस्याओं को भली-भाँति उजागर किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. लघुकथा में स्त्री विमर्श (लेख) सूर्यकान्त नागर
2. स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, डॉ. संजय गर्ग पृष्ठ 12
3. माँ का स्वरूप (लेख) सूर्यकान्त नागर
4. माँ के आसपास, प्रतापसिंह सोढ़ी पृष्ठ5
5. स्त्री-विमर्श का कालजीय इतिहास, डॉ. संजय गर्ग, पृष्ठ 127
6. माँ के आसपास, प्रतापसिंह सोढ़ी पृष्ठ 7
7. भविष्य से साक्षात्कार, इंदु गुप्ता पृष्ठ 11